हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2017

00924

एम.एच.डी.-15 : हिन्दी उपन्यास-2

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रथम प्रश्न अनिवार्य है । शेष प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं ***दो*** की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *2×10=20*

(क) सदा ही ऐसा हुआ है । संत अपने जीवन में ग़रीबों के होते हैं । मृत्यु के बाद अमीर उन्हें छीन लेते हैं । भगवान बुद्ध भिक्षा-वृत्ति से जीवन बिताते थे । उनके निर्वाण के बाद राजा उनके प्रचारक और प्रतिनिधि बन गए । ईसा के साथ भी यही हुआ । वही इस संत के साथ हो रहा है । कल यह लोग ताजमहल की लागत का एक गाँधी स्मारक बना देंगे और गाँधीजी के सिद्धांतों को उस महल की नींव में दबा देंगे ।

(ख) काशीराम, तुम निर्लेप फ़क़ीर हो । मैं दुनियादार । तुम्हारी दया-रहम वाली वृत्ति को क्यों बदलूँ ! सौ-पचास पर लकीर मार भी दोगे तो उसके भंडारे में कमी न आएगी । फिर शास्त्र मर्यादा कहती है – दान से आता है, जाता नहीं ।

(ग) कहानी कहना कठिन बात नहीं है । अगर कोई चीज़ मेरे सामने रख दें, यह शीशे का गिलास, यह ऐश-ट्रे और कहें कि इस पर कहानी कहूँ । थोड़ी देर में मेरी कल्पना जागृत हो जाएगी और उससे संबद्ध कितने लोगों के जीवन मुझे याद आ जाएँगे और वह चीज़ कहानी का सुन्दर विषय बन जाएगी ।

(घ) यदि तुम्हारे हाथ में शक्ति है तो उसका उपयोग प्रत्यक्ष रूप से उस शक्ति को बढ़ाने के लिए न करो । उसके द्वारा कुछ नयी और विरोधी शक्तियाँ पैदा करो और उन्हें इतनी मज़बूती दे दो कि वे आपस में एक-दूसरे से संघर्ष करती रहे । इस प्रकार तुम्हारी शक्ति सुरक्षित और सर्वोपरि रहेगी ।

2. 'राग दरबारी' में चित्रित वैद्य जी का चरित्र-चित्रण कीजिए । *10*

3. औपन्यासिक शिल्प की दृष्टि से 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए । *10*

4. कथावस्तु के आधार पर 'ज़िन्दगीनामा' के रचनात्मक उद्देश्य पर प्रकाश डालिए । *10*

5. 'झूठा-सच' के शीर्षक के औचित्य पर प्रकाश डालते हुए इसके उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए । *10*

6. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×5=10*

   (क) 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' के स्त्री चरित्र

   (ख) 'राग दरबारी' की भाषा

   (ग) 'झूठा-सच' का यथार्थ

   (घ) 'ज़िन्दगीनामा' और साझा संस्कृति

———